**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 20-06-2019; Accepted: 23-07-2019**
**www.hindijournal.com**
**Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 39-40**

# श्यौराज सिंह 'बेचैन' के जीवन की राहें

**डॉ. साधना सिंह**
पीएच.डी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

**सारांश**
श्यौराज सिंह 'बेचैन' हिंदी साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर है, विशेष रूप से दलित लेखन के क्षेत्र में उनकी एक खास पहचान है। पिछले दो दशक से भी अधिक समय से दलित संघर्ष और अस्मिता के प्रश्नों को वह निर्भीकता, स्पष्टता और तथ्यपरकता के साथ साहित्य के माध्यम से उठाते रहे हैं। दलित प्रश्नों को पूरी गंभीरता और गहराई से समझने और विश्लेषित करने में कुशल एवं महारथ प्राप्त लेखक होने के साथ - साथ श्यौराज सिंह 'बेचैन' व्यवस्था के एक मौलिक एवं व्यवहारिक अध्येता व चिन्तक है। समाज की समस्याओं का अध्ययन वह सिर्फ किताबों के जरिए नहीं करते बल्कि समाज से संपर्क और संवाद करके उन्हें समझने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि उनका चिंतन अकादमिक न होकर व्यवहारिक है। साहित्य को सामाजिक आन्दोलन का एक शस्त्र मानने वाले तथा दलित साहित्य के प्रखर प्रवक्ता के रूप में विख्यात डॉ. 'बेचैन' आन्दोलन के साहित्यिक राजदूत हैं।

**मूलशब्द:** चिंतन, व्यवहारिक, तथ्यपरकता, निर्भीकता, महारथ, संवाद अध्येता, विख्यात आदि।

***प्रस्तावना***

कीचड़ में कमल खिलता हुआ अगर किसी ने देखा है तो श्यौराज सिंह 'बेचैन' के रूप में हम देख सकते हैं। इस कथन को सही साबित करते हुए जयप्रकाश कर्दम कहते हैं - "श्यौराज सिंह 'बेचैन' मूलतः दलित, संवेदना के समर्थ शब्द -- शिल्पी लगते है।" १ ऐसे लेखक का जन्म ०५ जनवरी १९६० नंदरोली, बदायूँ, उत्तर-प्रदेश के एक दलित परिवार के चमार जाति में हुआ था। जिनका काम मरे मुर्दा उठाना, मरे पशुओं के चमड़े उतारना इत्यादि। परन्तु 'बेचैन' भी इन कामो से कैसे विमुख रह सकते थे। इनके ऊपर परिस्थितियों की मार ऐसी पड़ी कि ५-६ साल की उम्र में ही इनके पिता राधेश्याम की मृत्यु हो गई तथा माँ सूरजमुखी पूरी तरह से अशिक्षित थी। 'बेचैन' के बाबा का एक पैर टूटा था तथा चाचा नेत्रहीन थे। ऐसी स्थिति मैं वह बेघर हो गये क्योंकि उनकी माता की शादी रामलाल से तथा तीसरी शादी भिकारी नाम के व्यक्ति से कर दी थी। अपने सैतोले पिता के घर पढ़ाई करना दुष्कर बन गया था। वह छुप - छुपकर स्कूल जाते थे किन्तु

सौतेले पिता को मालूम चलने पर उसे लात - घूंसे का प्रहार सहना पड़ता था। पढ़ने की ललक इतनी थी कि मेहनत - मजदूरी करके किताबों के लिए पैसे जुटाया करते थे। 'बेचैन' शिक्षा का महत्व बचपन से ही समझते थे अपनी पढ़ाई खतरे में देखकर वह मास्टर प्रेमपाल सिंह यादव के यहाँ बालश्रम के रूप में दसवीं तक शिक्षा हासिल किया। "यह कैसी विडम्बना है कि दलित बच्चों को शिक्षा के लिए समय व वातावरण नहीं मिलता, एक बच्चा पढ़ना चाहकर भी पढ़ नहीं सकता। लेखक शिक्षा की महत्ता के बारे मैं जानता है कि जीवन की लड़ाइयों को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे अधिक शक्तिशाली शस्त्र है। शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार है।" २ मनुष्य के व्यकित्व को निखारने के लिए पुस्तकों का बहुत बड़ा योगदान होता है तथा शिक्षा का महत्त्व जानकर अपनी विपरीत आर्थिक, सामाज़िक स्थितियों से ग्रसित होते हुए भी उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए 'बेचैन' ने डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के 'शिक्षित बनो' के नारे पर अमल करते हुए उन्होंने शिक्षा प्राप्त करने के लिए होटल में जूठे बर्तन धोना, नीबूं बेचना, घरेलू नौकर बनना, पेपर फेंकना, मरे हुए जानवर की खाल छीलना, जूते सिलना, ऐसी स्थितयों से गुजरते हुए उन्होंने एम.ए, बी.एड, डी.लिट तथा हिंदी दलित पत्रकारिता पर पीएच.डी किया और वर्तमान समय में दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। इन्हें हिंदी के साथ - साथ अंग्रेजी, मराठी पर विशेष ज्ञान है। इन्हे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे साहित्य भूषण सम्मान, बाबा साहब डॉ अम्बेडकर राष्ट्रीय सम्मान, भारतीय उच्च अध्यन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला की ओर, डॉ राजेंद्र प्रसाद आवार्ड, प्रथम पुरूस्कार भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा, अम्बेडकर नेशनल विशेष सम्मान, कबीर सेना सम्मान, डॉ.बी.आर अम्बेडकर नेशनल विशेष सम्मान, स्वामी अछूतानंद अतिविशिष्ट सम्मान आदि।

'बेचैन' की लेखनी ने मनुवादी वर्ण व्यवस्था पर प्रहार करते हुए

समाज को जगाने की कोशिश की है चाहे हम कविता देखे या कहानी । उनकी कविता "क्रौंच हूँ मैं" काव्य संग्रह १९९५ में प्रकाशित हुयी थी । 'बेचैन' के इस संकलन को हिंदी अकादमी द्वारा प्रकाशन सहायता भी दी गयी थी । इस संग्रह में ८० कविताएँ है । इस कविताओं में कबीर के अंदाज में व्यक्त की गयी दलित संवेदना की तस्वीर है । कवि अपनी पीड़ा को व्यक्त करने में सफल भी हुआ और उसका दर्द काल्पनिक नहीं है उसके भीतर जल रहे अंगारे में सुलग रहा है तभी तो वह कहता है ---

"आदि कवि वंशज नहीं हूँ मैं
बल्कि क्रौंच हूँ मैं
भुक्त भोगी हूँ तुम्हारे तीर को
शिकार मेरा दर्द मेरा संताप

एक प्रेक्षक की अभिव्यक्ति नहीं है ।
बल्कि भोगे हुए,
यथार्थ की हकीकत ही है
जिसका मैं स्वयं साक्ष्य हूँ ।" ३

इसी प्रकार 'ढोंग' नामक कविता में जहाँ पर पशु (गाय ) पूजनीय माना जाता है तथा चीटी को आटा, सांप को दूध पिलाया जाता । परन्तु एक मनुष्य की स्थिति को इतनी दयनीय बना देता है कि उसके मन में दया की भावना भी नहीं उपजती तथा धर्म ग्रंथो का वास्ता देकर पूरे कौम को अस्पृस्य तथा बहिस्कृत कर दिया जाता है तथा हिन्दू संस्कृति पर कड़ा प्रहार करके कवि कहता है –

"तुम उदार थे
गाय के प्रति
और हम थे
आदमी की
शक्ल में निरेगाया ।" ४

इस कविता संग्रह की भाषा में सहज खुलापन है तथा व्यंग्य पूर्ण अपनी बात कही गयी है । तभी तो कवि केदारनाथ सिंह ने इसकी भूमिका में कहा है – "संग्रह की कविताओं का मूल स्वर व्यंग्य है और यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि इस विधा में कवि का हाथ काफी सधा हुआ है ।" ५

इसी प्रकार इनकी कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' है जो श्यौराज सिंह 'बेचैन' का पहला कहानी संग्रह है । जिसमे १० कहानी का संकलन है । सभी कहानी का मूल स्वर वर्ण व्यवस्था से पीड़ित दलित समाज का चित्रण, तथा किस तरह गाँव, शहर, पुलिस -प्रशासन, मीडिया सब में जातिवाद, ठग भरे हुए है । 'बेचैन' ने अपनी कहानी 'नॉन रिफंडेबल' जो भष्ट्राचार घूस पर आधारित है । एक दलित होने की सज़ा उसे किस तरह चुकानी पड़ती है । अपने बेटे को प्राइवेट स्कूल में दाखिला कराने के लिए वह अपना खेत बेचकर उसे काबिल इन्सान बनाने के लिए डोनेशन देकर प्राइवेट स्कूल में दाखिला कराता है । परन्तु थोड़े दिन पश्चात उसका लड़का बीमार हो जाता है वह जब डोनेशन के रूप में दी गयी फीस माँगने जाता है तो वहां का मैनेजेर बोलता - "डोनेशन क्या मतलब ? क्या मैं मुफ्त में पढ़ाउंगा ? क्या मैं मैनेजर न होकर
अनाथालय का मालिक हूँ । स्कूल धंधे में मोटी कमाई न होती तो मैं कोई और धंधा करता । मैं बिजनेसमैन हूँ, मुझे भी चार पैसे कमाने है ....मै क्या उल्लू का पठ्ठा हूँ या पागल कुत्ते ने काटा है मुझे, बहरे हो गए थे तुम जब मैंने कहा था कि डोनेशन नॉन रिफंडेबल ।" ६ बिना पैसो से इलाज करने को डॉक्टर भी मना कर देता । चन्दन स्कूल और डॉक्टर का चक्कर लगाकर हार जाता है परन्तु अपने बेटे को नहीं बचा पाता और इस व्यवस्था से लड़ते - लड़ते खुद की साँस रुक जाती है ।

**निष्कर्ष**

मेरे विचार से एक दलित साहित्य वही लिख सकता है, जिसने दलित जीवन भोगा हो और श्यौराज सिंह 'बेचैन' उन्ही दलित साहित्यकारों में से एक है । इन्होंने अपने साहित्य में भोगे हुए यथार्थ का चित्रण किया है । बहुत तकलीफों और कष्टों से गुजर कर 'बेचैन' जी को आज कामयाबी प्राप्त हुई है । कमोबेश लेखक ने अपने जीवन के हर पहलू की चर्चा अपने साहित्य के माध्यम से की है । 'बेचैन' ने हिंदी दलित लेखन में एक समर्थ पहचान बनाई है । यह उनकी रचनाओं से स्पष्ट हो जाता है कि उनके व्यक्तित्व में वर्ण - व्यवस्था के प्रति आक्रोश और विद्रोह है तो दूसरी और दलित वर्ग की महत्ता स्थापित करने की ललक भी है । मनुष्य की सबसे बड़ी पहेली उसका अपना व्यक्तित्व होता है, श्यौराज सिंह 'बेचैन' का व्यक्तित्व भी एक बड़ी पहेली है और अपने साहित्य के माध्यम से दलित साहित्य का वास्तविक मूल्य आँका है तथा समाज और जीवन को नवीन आयाम देते हुए साहित्यक आलोचना की नई दृष्टि की ओर सकेंत किया है ।

**सन्दर्भ - सूची**


1. 'क्रौंच हूँ मैं' - डॉ श्यौराज सिंह 'बेचैन', काव्य संग्रह भूमिका से ।
2. चर्चित हिंदी की दलित आत्मकथाएं : एक मूल्यांकन - डॉ ललित कौशल, पृष्ठ - १८ ।
3. 'क्रौंच हूँ मैं' - डॉ श्यौराज सिंह 'बेचैन', पृष्ठ - २० ।
4. वही, पृष्ठ - ३० ।
5. 'क्रौंच हूँ मैं' - डॉ श्यौराज सिंह 'बेचैन', काव्य संग्रह भूमिका से ।
6ण 'भरोसे की बहन', - डॉ श्यौराज सिंह 'बेचैन', पृष्ठ - १३८ ।